



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सुमित्राचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक मार्केट	१५-१२-२३	३	३-५

• हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ शुभारंभ **ई-संसाधनों का प्रयोग कर विद्यार्थियों को हमेशा रहना चाहिए अपडेट : वीसी**

भारतम् द्यूज | हिसार

ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी आईटी के आगमन के साथ यह विभिन्न आईसीटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनियाभर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे आज विवि के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ पर संबोधित कर रहे थे।

इस प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय द्वारा किया गया है। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है। ये संसाधन विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा आज पुस्तकालय विभिन्न ई-संसाधनों जैसे ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, सार्विक्यकार्य डेटाबेस, ई-लर्निंग टूल



इत्यादि की सदस्यता ले रहे हैं, कंसोर्टियम में भाग ले रहे हैं और इंटरनेट पर स्वतंत्र रूप से सुलभ ओपन एक्सेस संसाधनों की पहचान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नेहरू पुस्तकालय अपने स्वचालन के लिए नवीनतम तकनीक के कार्यान्वयन और अपने उपयोगकर्ताओं को बेहतर और त्वरित सेवाएं प्रदान करने में ट्रेंड सेंटर रही है। हाल ही में नेहरू लाइब्रेरी ने सीसीएसएचयू ई-लाइब्रेरी नाम से रिफ्रेंड डिस्कवरी प्लेटफॉर्म की सदस्यता ली है।

स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता, आईडीपी परियोजना के प्रमुख अन्वेषक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. केडी शर्मा ने पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पुस्तकालय में 3.82 लाख प्रिंट

दस्तावेज हैं और डेटाबेस के माध्यम से करीब 2.75 लाख ई-पुस्तकें, 4,300 से अधिक ई-जर्नल भारतीय और विदेशी जर्नल सब्सक्राइब्ड और कंसोर्टियम और 4.30 लाख प्रश्न बैंक डेटाबेस सहित अन्य लेखों का पुस्तकालय उपयोगिताकर्ता लाभ उठा रहे हैं।

नेहरू पुस्तकालय के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. बलवान सिंह ने गोष्टीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत आयोजित उपरोक्त दो दिवसीय प्रशिक्षण के कार्यक्रमों, तकनीकी सत्रों सहित समस्त रूपरेखा की जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव पटेरिया ने धन्यवाद किया, जबकि मंच का संचालन डॉ. सीमा परमार ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दृष्टि भूमि	१५-१२-२३	११	२-५

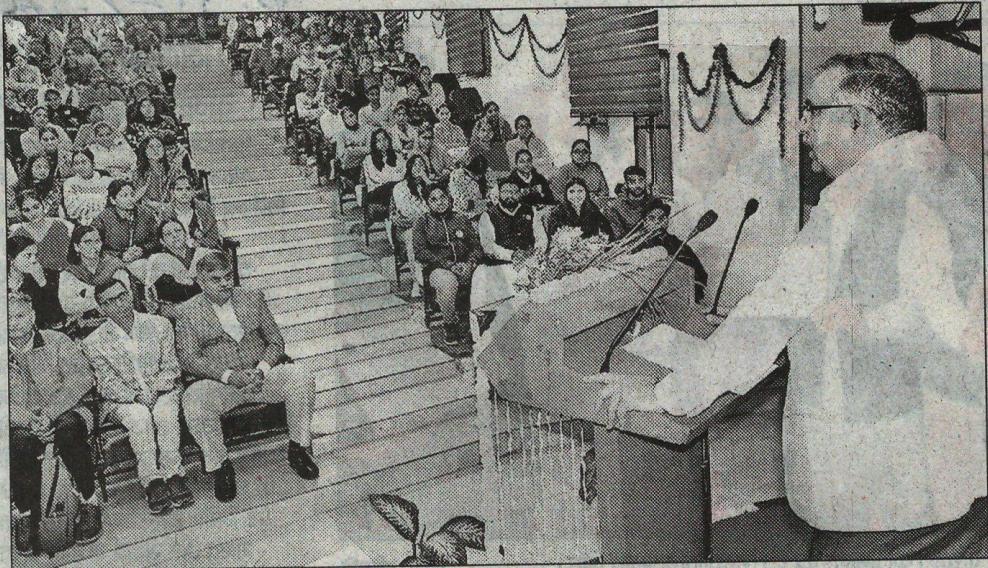
दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ

ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहें विद्यार्थी: प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आईसीटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। प्रो. काम्बोज विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय की ओर से शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

इस प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय द्वारा किया गया है। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित छात्राओं की अधिक संख्या पर खुशी जाहिर की और कहा कि पुस्तकालय उपयोगकात्तरं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है क्योंकि ये संसाधन विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से उपलब्ध हैं। मैं जानता हूं कि हकूमिं के



हिसार। प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर अपना संबोधन देते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

फोटो: हरिभूमि

विद्यार्थी नेहरू पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाकर अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में प्रतिष्ठित पदों पर कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने कहा आज पुस्तकालय विभिन्न ई-संसाधनों जैसे ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, संख्यिकीय डेटाबेस, ई-लर्निंग टूल इत्यादि की सदस्यता ले रहे हैं, कंसोर्टियम में भाग ले रहे हैं और इंटरनेट पर स्वतंत्र रूप से सुलभ ओपन एक्सेस संसाधनों की पहचान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि नेहरू पुस्तकालय अपने स्वचालन के

लिए नवीनतम तकनीक के कार्यान्वयन और अपने उपयोगकात्तरं को बेहतर और त्वरित सेवाएं प्रदान करने में ट्रेंड सेंटर रही है। उन्होंने ई-संसाधन जुटाने में विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय की प्रशंसा की तथा स्नातक विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने मोबाइल फोन पर इस डिस्कवरी प्लेटफार्म का मोबाइल एप डाउनलोड करें और पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंच बनाकर लाभ उठाएं। स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता, आईडीपी परियोजना के प्रमुख अव्वेषक एवं

पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. केढी शर्मा ने सभी का स्वागत किया और पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पुस्तकालय में 3.82 लाख प्रिंट दस्तावेज हैं और डेटाबेस के माध्यम से लगभग 2.75 लाख ई-पुस्तकें, 4,300 से अधिक ई-जर्नल भारतीय और विदेशी जर्नल (सब्सक्राइब्ड और कंसोर्टियम) और 4.30 लाख प्रश्न बैंक डेटाबेस सहित अन्य लेखों का पुस्तकालय उपयोगिताकर्ता लाभ उठा रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

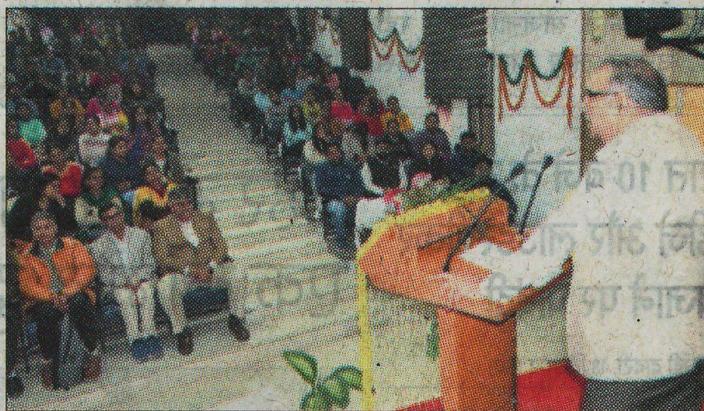
सम्पादक पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक इतिहास	14-12-23	12	५-६

ई-संसाधनों से अपडेट रहें विद्यार्थियों : काम्बोज हकृति में दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ

हिसार, 13 दिसंबर (हप्र)

ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आईटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे आज विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर-



हकृति में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर अपना संबोधन देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

रहे थे। इस प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय द्वारा किया गया है।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कार्यशाला में उपस्थित छात्राओं की अधिक संख्या पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा

पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है। क्योंकि ये संसाधन विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से उपलब्ध हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
पंजाब के सरो

दिनांक
१५. १२.२३

पृष्ठ संख्या
३

कॉलम
७-८

विद्यार्थियों को ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहना चाहिए : प्रो. काम्बोज



अपना संबोधन देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

यह विभिन्न आई.सी.टी. तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वै आज विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित 2 दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे। इस प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय द्वारा किया गया है।

मुख्यालिखि प्रो. काम्बोज ने कहा पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है। क्योंकि ये संसाधन विभिन्न वैबसाइटों के माध्यम से उपलब्ध हैं।

उन्होंने कहा कि कृषि पुस्तकालयों के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद विभिन्न प्रकार के ई-संसाधनों जैसे कृषिकोष डिजिटल रिपोजिटरी, सी.ई.आर.ए. के माध्यम से ई-जर्नल्स, कृषि शिक्षा ई-लर्निंग पोर्टल और एनएआरएस के तहत कई अन्य संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने के लिए सहायता प्रदान कर रहा है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हिसार, १३
दिसम्बर
(ब्यूरो): ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी के



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
अभ्युक्ता

दिनांक
14-12-23

पृष्ठ संख्या
4

कॉलम
2-6

आयोजन

एचएयू में दो दिवसीय शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर प्रशिक्षण का शुभारंभ

विद्यार्थियों को ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहना चाहिए : प्रो. कांबोज

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आईसीटी तकनीकों के माध्यम से फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर प्रभाव डाला है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहे। वे बुधवार को विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे। इस प्रशिक्षण का



एचएयू में भाषण देते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय की ओर से किया गया है। साथ ही उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहना चाहिए।

मुख्यातिथि प्रो. कांबोज ने कहा मैं जानता हूं कि एचएयू के विद्यार्थी नेहरू पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाकर अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में प्रतिष्ठित पदों पर कार्य कर रहे हैं और आज

पुस्तकालय विभिन्न ई-संसाधनों जैसे ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, सार्थिकीय डेटाबेस, ई-लर्निंग टूल इत्यादि की सदस्यता ले रहे हैं। हाल ही में नेहरू लाइब्रेरी ने सीसीएसएचएयू ई-लाइब्रेरी नाम से रिफ्रेड डिस्कवरी प्लेटफॉर्म की सदस्यता ली है। उन्होंने विद्यार्थियों से आत्मान किया कि वे अपने मोबाइल फोन पर इस डिस्कवरी प्लेटफॉर्म का मोबाइल एप डाउनलोड करें और पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंच बनाकर लाभ उठाएं।

स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता, आईडीपी परियोजना के प्रमुख अन्वेषक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. केडी शर्मा ने सभी का कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव पटेरिया ने धन्यवाद किया, जबकि मंच का संचालन डॉ. सीमा परमार ने किया। संवाद

दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पुस्तकालय में 3.82 लाख प्रिंट दस्तावेज हैं और डेटाबेस के माध्यम से लगभग 2.75 लाख ई-पुस्तकें, 4,300 से अधिक ई-जर्नल भारतीय और विदेशी जर्नल और 4.30 लाख प्रश्न बैंक डेटाबेस सहित अन्य लेखों का पुस्तकालय उपयोगिताकर्ता लाभ उठा रहे हैं।

नेहरू पुस्तकालय के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. बलवान सिंह ने राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना (आईडीपी) प्रोजेक्ट के तहत आयोजित उपरोक्त दो दिवसीय प्रशिक्षण के कार्यक्रमों, तकनीकी सत्रों सहित समस्त रूपरेखा की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव पटेरिया ने धन्यवाद किया, जबकि मंच का संचालन डॉ. सीमा परमार ने किया। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचूर पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उजात समाचार	१५-१२-२३	५	२-४

विद्यार्थियों को ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहना चाहिए : कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज

हक्कि में दो दिवसीय शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर प्रशिक्षण का शुभारंभ

हिसार, 13 दिसम्बर (विरेंद्र वर्मा): ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आईसीटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा। वे आज विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर अपना संबोधन देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।



हक्कि में दो दिवसीय शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर आयोजित प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर अपना संबोधन देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

इंटरनेट पर स्वतंत्र रूप से सुलभ कृषि शिक्षा ई-लर्निंग पोर्टल और सेवाएं प्रदान करने में ट्रेंड सेंटर रही है। ओपन एक्सेस संसाधनों की पहचान एनएआएस के तहत कई अन्य हाल ही में नेहरू लाइब्रेरी ने कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने के पुस्तकालयों के लिए भारतीय कृषि उन्नत संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने के लिए सहायता प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि नेहरू पुस्तकालय उन्होंने कहा कि नेहरू पुस्तकालय सदस्यता ली है। इस एकल खोज मंच अपने स्वचालन के लिए नवीनतम तकनीक के कार्यक्रमों, तकनीकी सत्रों सहित समस्त रूपरेखा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) विभिन्न प्रकार के ई-संसाधनों जैसे कृषिकौश डिजिटल रिपोजिटरी, सीईआरए के माध्यम से ई-जर्नल्स, उपयोगकर्ताओं को बेहतर और त्वरित

लिए अपने सभी ई-संसाधनों तक दूसरी पहुंच प्रदान कर रही है। उन्होंने ई-संसाधन जुटाने में विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय की प्रशंसा की तथा स्नातक विद्यार्थियों से आहान किया कि वे अपने मोबाइल फोन पर इस डिस्कवरी प्लेटफॉर्म का मोबाइल एप डाउनलोड करें और पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंच बनाकर लाभ उठाएं। स्नातकोत्तर शिक्षा अधिकारी, आईटीपी परियोजना के प्रमुख अन्वेषक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. बलवान सिंह ने राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना (आईटीपी) प्रोजेक्ट के तहत आयोजित उपरोक्त दो दिवसीय प्रशिक्षण के कार्यक्रमों, तकनीकी सत्रों सहित समस्त रूपरेखा की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव पटेल ने धन्यवाद किया, जबकि मंच का संचालन डॉ. सीमा परमार ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मुचार पत्र का नाम
दैनिक जागरूक

दिनांक
१५ - १२ - ८७

पृष्ठ संख्या
२

कॉलम
४-५

ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना जरूरी : कुलपति

जागरण संवाददाता, हिसार : ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आइसीटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के मौलिक

विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ पर संबोधित कर रहे थे।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

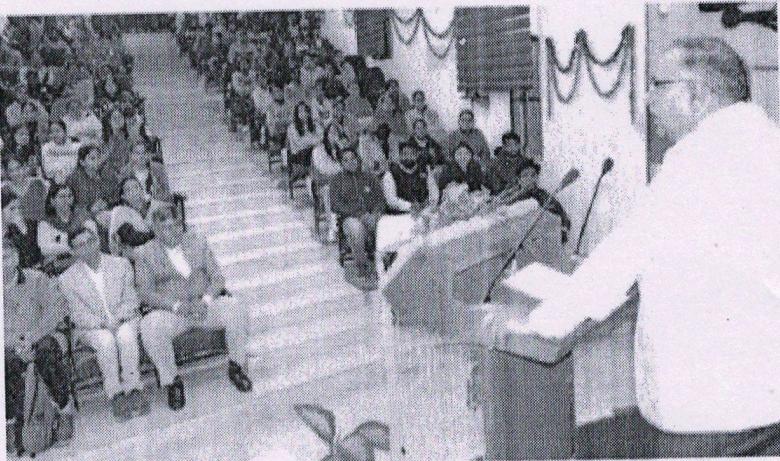
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समाचार पत्र १३२४ पृ८५	13.12.2023	--	--

विद्यार्थियों को ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहना चाहिए : प्रो. बी.आर. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। ज्ञान अब देश व विदेश की परिधि में बंधा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आईसीटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे आज मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे।

प्रो. काम्बोज ने कहा पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है। क्योंकि ये संसाधन विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से उपलब्ध हैं। आज पुस्तकालय विभिन्न ई-संसाधनों जैसे ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, साइबरिकीय डेटाबेस, ई-लैनिंग टूल इत्यादि की सदस्यता ले रहे हैं, कंसोर्टियम में भाग ले रहे हैं और इंटरनेट पर स्वतंत्र रूप से सुलभ ओपन एक्सेस संसाधनों की पहचान



प्रशिक्षण के शुभारंभ अवसर पर अपना संबोधन देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि पुस्तकालयों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) विभिन्न प्रकार के ई-संसाधनों जैसे कृषिकोश डिजिटल रिपोजिटरी, सीईआरए के माध्यम से ई-जर्नल्स, कृषि शिक्षा ई-लैनिंग पोर्टल और एनएआरएस के तहत कई अन्य संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने के लिए सहायता प्रदान कर रहा है।

उन्होंने ई-संसाधन जुटाने में विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय की प्रशंसा की तथा स्रातक विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने मोबाइल फोन पर इस डिस्कवरी प्लेटफॉर्म का मोबाइल एप डाउनलोड करें और पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंच बनाकर लाभ उठाएं।

पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. के.डी. शर्मा ने पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पुस्तकालय में 3.82 लाख प्रिंट दस्तावेज हैं और डेटाबेस के माध्यम से लगभग 2.75 लाख ई-पुस्तकें, 4,300 से अधिक ई-जर्नल भारतीय और विदेशी जर्नल (सब्सक्राइब्ड और कंसोर्टियम) और 4.30 लाख प्रश्न बैंक डेटाबेस सहित अन्य लेखों का पुस्तकालय उपयोगिताकर्ता लाभ उठा रहे हैं।

इस अवसर पर पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. बलवान सिंह, डॉ. सीमा परमार, डॉ. रजीव पटेरिया, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और विद्यार्थी उपस्थित रहे।



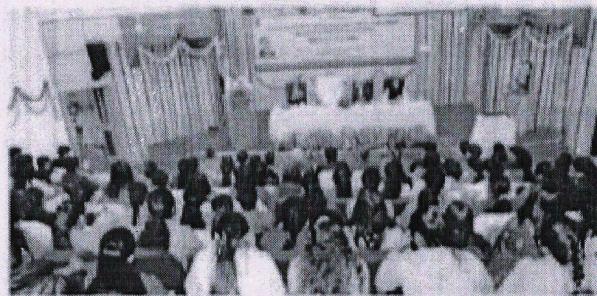
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्माचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नं-२१२१७। २०२३	13.12.2023	--	--

विद्यार्थियों को ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहना चाहिए : कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज

हिसार (विद्याग टाइम्स)

जान अब देश व विदेश की परीक्षा में बढ़ा हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आगमन के साथ यह विभिन्न आईटी तकनीकों के माध्यम से सीमाओं से परे फैल रहा है। इसने दुनिया भर के पुस्तकालयों पर अहूत बड़ा प्रभाव डाला है। ये विद्यार्थी चरण गिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे आज विश्वविद्यालय के भीलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के सुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे। इस प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय द्वारा किया गया है। मुख्यालिंग प्रो. काम्बोज ने अपने



संबोधन में कार्यशाला में उपस्थित छात्रों की अधिक संख्या पर सूझी जातिर की। उन्होंने कहा कि पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं विशेषकर विद्यार्थियों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूक करना अहूत जरूरी बन गया है। उन्होंने कहा कि नेहरू पुस्तकालय अपने संचालन के लिए नवीनतम तकनीक के कार्यालय और अपने उपयोगकर्ताओं को बेहतर और त्वरित सेवाएं प्रदान करने में ट्रेन सेटर रही है। उन्होंने ई-संसाधन जुटाने में विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय की प्रशंसा की तथा यातक विद्यार्थियों से आहुन किया कि वे अपने मोबाइल फोन

पर इस विस्कवरी प्लेटफार्म का मोबाइल एप डाउनलोड करें और पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंच बनाकर लाभ उठाएं। खाताकोर शिक्षा अधिकारी, आईटीपी परियोजना के प्रमुख अध्येतक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. के.डी.शर्मा ने सभी का स्वागत किया और पुस्तकालय में उपलब्ध सूचियों के बारे में विस्तरपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पुस्तकालय में 3.82 लाख प्रिंट दस्तावेज़ हैं और डेटाबेस के माध्यम से लगभग 2.75 लाख ई-पुस्तकें, 4,300 से अधिक ई-जर्नल भारतीय और विदेशी जर्नल (सञ्चाकाइष्ट और कासोटियम) और 4.30 लाख

प्रस्तुत वैक डेटाबेस महिल अन्य सेक्षणों का पुस्तकालय उपयोगिताकार्ता लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पुस्तकालय ई-पोर्टल को अपडेट कर नवीनतम तकनीकों को अधिक से अधिक विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए प्रयत्नारत है।

नेहरू पुस्तकालय के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. वल्लवान मिंह ने राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना (आईटीपी) प्रोजेक्ट के तहत आयोजित उपरोक्त दो दिवसीय प्रशिक्षण के कार्यक्रमों, तकनीकी सभी सहित समाप्त रूपरेखा की जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव पटेलिया ने घन्घवाद किया, जबकि मंथ का संचालन डॉ. सीमा परमार ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सम्मत महाविद्यालयों के अधिकारी निदेशक, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक शिक्षाविद् और विद्यार्थी उपस्थित रहे।



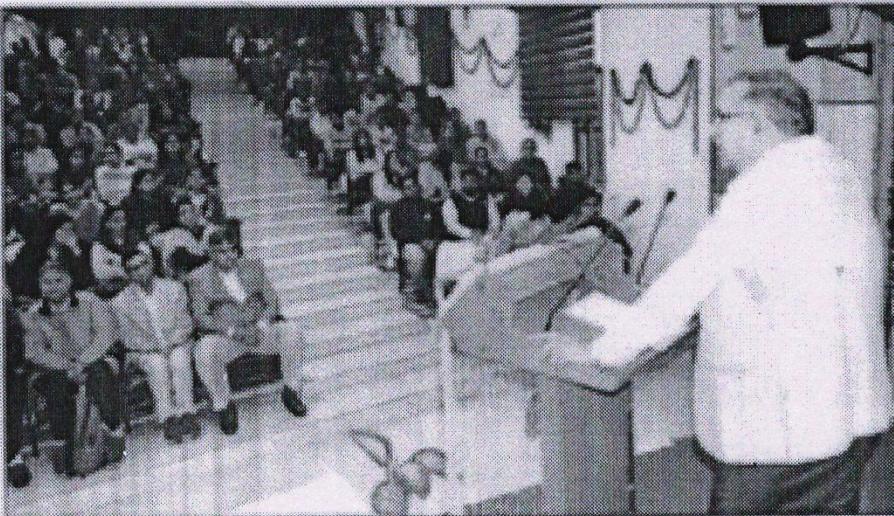
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समझ हरिपुरा	13.12.2023	--	--

ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहें विद्यार्थी : प्रो. काम्बोज

मध्यम स्तरीय वार्षिक नमूने
 दिलाई। इन अलग देशों के विभिन्न वर्षों में
 बदल दृष्टि नहीं है बल्कि सूखना दृष्टिकोणीयी
 (वर्षीयी) वैज्ञानिक के साथ वह विभिन्न
 अवधिकोणीयी वर्षोंको के विवरण में वर्णन करते हैं ये
 ये विस्तृत रहा है। इसने दुनिया भर के
 पुस्तकालयों पर अपना चढ़ा विवरण लाया है। ऐसे
 विवरण वैश्वी जगत में सूखना कृति
 विवरणालय के कुछतरी तौर पर उत्तर
 वर्षोंको ने कहा है कि अब विवरणालय के
 विवरण विवरण सूखे वर्षोंकी विवरणालय में
 निम्न पुस्तकालय द्वारा 'सूखना दृष्टिकोणीयी'
 के 'सूखे वर्षोंका एवं उत्तरीय' विवरण वर्ष
 अवधिकोणीयी के विवरण दृष्टिकोण के सूखना
 अवधि का संक्षेप कर दिया गया है। इन पुस्तकालय
 का उत्तरीय विवरणालय के विवरण

प्रायः विद्युति है। विद्युति ने अपनी संस्कृतमें कल्पकाल में उत्तरवाच वाचों से अविक्षयित वाच या वाचों वाचित् कहा। उत्तरवाच वाचप्रायकाल में उत्तरवाचीकृति विद्युतिकार विद्युतिर्थों से इन ई-वाचोंको के उपरोक्त के बाहर में वाचकाल वाचवाच वाचों वाच वाच ही विद्युति ने संस्कृत विद्युति के



प्राचीन से उत्तम
के लिये ऐसा
सुरक्षित हो जा सकता है।
लेकिन इसके बारे में कहा जाएगा।

समाजात्मकीय से रहे हैं, जिसमें विभिन्न मैलों के साथ लें
और इंटरेक्ट पर समाजी सत्र के समान
एकमेयज समाजवादी वीरे का चक्र बन रहा है। इस
काल किंवित उत्तराधिकारी के लिए, यह
कुप्रिय अनुभव है जिसके (अधिकारिताता) फैलाव
प्रसार की ओर संसाधनों को लेकर अनिवार्य दिख
रही रहती है, संसाधनात् के व्यवापर में ही ज

मायथ ते, नाहीती वेळ इडवा वा
कातो संस्कृताचापू के हीलिंग
अनुसार संदूषण के लिए अनेक
संस्कृत तक लागव मुख इडवा वा
उपरोक्त संस्कृत द्रुतां वै विशेषीय
वैष्ण व्याधावाप के प्रभाव वी तथा
विशेषीय वै आहारन विकास कि दे

वैदिक पुराणों के पृष्ठ पुराणों का विवर है कि यजमान सिंह ने एक दूसरे यजमान की जीत की तरफ (आर्यों की) श्रीमति के नाम अपनी उपलक्ष्य द्वे विवरण इन्द्रियों के वर्णन की तरफ से याद रखता समझता था।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
प्रगति पत्र	13.12.2023	--	--

हकूमति के एबिक सेंटर में 'कृषि एवं खाद्य प्रणाली में समावेशी व्यवसाय' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

कुछिं प्रेमं उद्यमिता की आपार संभावनाएं, बेरोजगार युवक उठाए पतायदा : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हरियाणा व तेलगुन्ना के किसानों के हित और आमदनी बढ़ाने के लिए योजनाएं तैयार करेगा यूएनओ : मार्टा पैरेज

અધ્યાત્મ

किंतु, १३ दिसंबर :
लंगड़ी पात्र निष्ठा विभिन्न
विवरणात्मक और लंगड़ी दृश्य
के संग्रह अधिकारी ने आप
प्राप्ति ग्रन्थ एवं उपर्युक्त
प्राप्ति विवरण एवं उपर्युक्त
प्राप्ति विवरण को अधिकारी
निष्ठा द्वारा विवरणात्मक
के अनुसार पूर्ण वैज्ञानिक
तथा वार्तालालीक होने
की दृष्टि से लंगड़ी एवं उपर्युक्त
प्राप्ति विवरण एवं उपर्युक्त
प्राप्ति विवरण के अधिकारी
विवरणात्मक एवं उपर्युक्त
प्राप्ति विवरण एवं उपर्युक्त
प्राप्ति विवरण के अधिकारी

प्रधानार्थ इत्यरक प्रवास विभाग
में इसके अलावा इत्यरका समाज
में विदेशी समाजात्मक विषय के
समाजकारी भी प्रबल चैर्चर, ऐकाइ
के विधायिक में केवल प्रबल एवं
इत्यरका समाज में इत्यरक इत्यरक
समीक्षा के लियोगा विविहीन व्यक्त
विविहीन विषय में उत्तमता है।

जगत के अनुभव उन्हीं विद्यार्थियों पर प्रभाव करता है एवं जिनमें से जिनमें वही लोगों के अनुभव जो गुणवत्ता, गुण विकास, विनियोग, संविधान एवं विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता वालों के लिए अनुभव प्रभाव करता है उसी वे अवधि अनुभव को उन्हें एक प्रभावित कर देती है। इसलिए कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों द्वारा इन विषयों में विशेषज्ञता के प्राप्ताने में विशेषज्ञ व उच्च विशेषज्ञ, गुणवत्ता एवं विभिन्न कार्यों के लिए अनुभव प्रभाव करता है जिनमें अवधि अनुभव को उन्हें एक प्रभावित कर देती है।

हार्दिकाल तक नेपालीगढ़ की
समर्पणीय स्थिति है जोड़ा
गया है; यहाँ भी ज
भूमिका वह वी परिय और
परांत बीची अधिक एवं
सामाजिक आवाहन (प्रयोगो) के
अधिक प्रयोग के अधिकारी गठ
प्रिये वे अवाया कि वह संबद्ध
श्रियां व लेखांशु में श्रमिक और
इन्द्रिय द्वारा के भूमिका समर्पण है
कि एवं इन्हाँ गुणों में सामाजिकी
समाजात्मक विषय पर की मर्यादे के द्वारा
और आमतौर पर उन्होंने कि विषय
समर्पण द्वारा करता है। उसके काल
कि इन गोंदव के लाल उपर्योग
वेद्य प्रयोग के विवरण के संबंधमें
वह याच कर रहे व उन्होंने
आधिक एवं मानवू व्यवसंग और



जानियो कि यहाँ बहारे के लिए^१
प्राप्त हिंदू जारी।

कि इस योग्यता के लाल उपर्युक्त विवरणों के विवरणों के सम्बन्ध में यह एक काम करते हैं जो उनकी अधिक रुप से प्रभावी बनवाए और

जात भूमिका पूर्ण करने में असम ही उत्तरी चीपा कुमार सेना, यहाँ प्रवाल-योग अद्वीतीय प्रबल्यम् पर, जिसके अन्तर्गत एकादश यीं शोधी वही थी जिसके द्वारा यहाँ सेना अंग द्वारा दिये गए अधिकारों को अवश्यक घोषणा कराया। यहाँ ही उत्तरी भूमिका में अधिकार पत्र कुट पर्याप्त है इनका यह एक विवरण भूमिका को बताता है जिसके द्वारा यहाँ प्रवाल-योग के अधिकारों को आवश्यक कराया।

अन्यथा ही उन्हें बताते कि उसका प्रयोग करने वाली समाजिक विधि एवं विवेद के अधिकारी के उत्तरी को विवेद करने पर विवाहाधार्य कर सकता है।

उन अवसरों पर युवती के अधिकारी पर्याप्त विकास के लाभान्वयन का, अद्युत दर्शक, विवेदित इन्डिपेंडेंट (आर्टिस्टिक) चू. एवं एक विवेद इन्डिपेंडेंट इन्डिपेंडेंट, विवेदित, विवेद विवेदित के अधिकाराधार्य, प्रार्थित विवेद एवं विवेद मैत्रा के सदस्य भी उपलब्ध हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाँडु ५६१	13.12.2023	--	--

हकूमिक के वैज्ञानिकों ने आलू की फसल में पिछेती झुलसा बीमारी के प्रकोप की संभावना जताई, फफूंदनाशक छिड़काव करने की दी सलाह

पाठ्यक्रम चूज

हिसार, 13 दिसम्बर : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला-हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित हॉटो-ब्ल्यूइटकास्ट पैन इंडिया मौडल से पिछेती झुलसा बीमारी का पूर्वानुमान लगाया गया है। जीवरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. श्री. आर. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक फसलों में आने वाली समस्याओं के बारे में समय से

पहले किसानों को लगातार सलाह दे रहे हैं। इसी कड़ी में आलू से संबंधित किसानों को सलाह दी जा रही है कि भविष्य में किसार जिते में आलू की फसल में पिछेती झुलसा बीमारी आने की संभावना है, जिन किसानों ने आलू की फसल में अपी तक फफूंदनाशक दवा का छिड़काव नहीं किया है या जिनकी आलू की फसल में पिछेती झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि किसान मैनेजरों द्वारा इंडोकॉल एन-45 या मैनजरेब दवा

600 से 800 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। साथ ही 10 दिन के अंदराल में किसान आलू की फसल से जल निकासी का उचित प्रबंध करें और खेतों को खरपतवार रहित रखें। कृषि महाविद्यालय के सभी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस. के. तेलाना ने कहा कि पिछेती झुलसा बीमारी फाइटोप्शेर इन्सेटाइंस फफूंद के कारण होता है, जिसका प्रभाव पौधों के सभी भागों से संपर्कों, तभी व कहां पर दिखाई

पड़ते हैं। पिछेती झुलसा बीमारी का प्रारंभिक लक्षण आलू के पौधों की पत्तियों पर खलों के रूप में दिखाई देता है जो बाद में गहरे भूरे तथा बीजनी रंग में बदल जाता है। उन्होंने कहा कि किसानों को आलू की फसल को पिछेती झुलसा बीमारी से बचाने के लिए सामग्र-समय पर फफूंदनाशक दवाओं का छिड़काव करते रहना चाहिए। साथ ही फसल की नियायनी हर 10 दिन के अंदर करते रहना चाहिए। वैज्ञानिक डॉ. रामेश चूष ने किसानों को आलू



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
पाठ्य बजे

दिनांक

13.12.2023

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

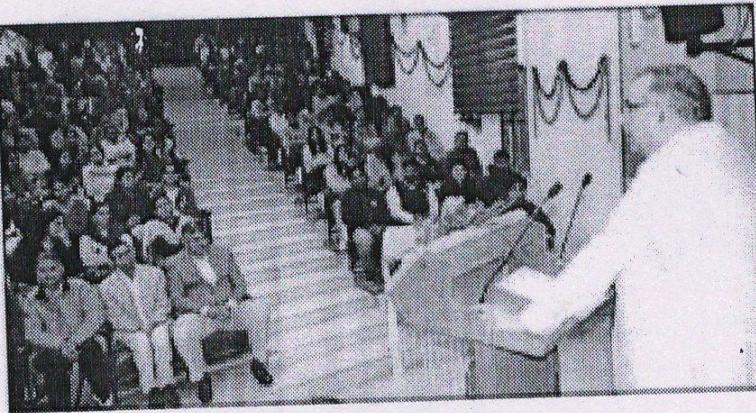
--

हकूमि में दो दिवसीय शैक्षणिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर प्रशिक्षण का शुभारंभ

ई-संसाधनों का उपयोग करके अपडेट रहें विद्यार्थी : प्रो. काम्होज

प्राप्त वार्ता विषय

हिसार। इन अब केवल विदेश की परिविहार में बोल हुआ नहीं है बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के आवासन के मध्य यह डिपिल आईटीवाई तकनीकों के प्रबल्लय से संबंधितों में पो केन्द्र रहा है। इसने दुर्विधा पर के कृतकालनों पर बहुत बड़ा प्रभाव छाड़ा है। ये विद्यार्थी और विद्यार्थी वाचन तक लोकान्न कृषि विश्वविद्यालय के कृतकालनि प्रो. वी.आर. काम्होज ने कहा। वे आज विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिक विभाग एवं प्रशिक्षणीय प्रशिक्षणालय में नेहरू पुस्तकालय द्वारा 'प्रौद्योगिक ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के मुभारंभ अवधार पासंबोधित कर रहे थे। इस प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के नेहरू पुस्तकालय द्वारा किया गया है।



विद्यार्थीयों को इन ई-संसाधनों के उपयोग के लिए जागरूक करना बहुत जरूरी बन गया है। कॉलेज ये संसाधन डिपिल वैज्ञानिकों के प्रबल्लय से उपलब्ध है। मैं बहनता हूं कि हमुद्दि के विद्यार्थी नेहरू पुस्तकालय में उपयोग प्रशिक्षण संसाधनों वाले लक्ष्य उत्तमतर और अन्य एकमेंस संसाधनों की पहचान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि पुस्तकालयों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईआरएआर) डिपिल प्रबल्लय के ई-संसाधनों जैसे वृत्तिवेता डिपिल

प्रौद्योगिक विषय के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर खुशी जहार रही। उन्होंने कहा आज फुस्तकालय परम्परागतीयों वाले लक्ष्य उत्तमतर और अन्य एकमेंस संसाधनों की पहचान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि पुस्तकालयों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईआरएआर) डिपिल प्रबल्लय के ई-संसाधनों जैसे वृत्तिवेता डिपिल

प्रौद्योगिक विषय के प्रति जागरूकता एवं उपयोग विषय पर खुशी जहार रही। कै.के.सर्वो ने पुस्तकालय में उत्तम सुविधाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पुस्तकालय में 3.82 लाख विट दस्तावेज हैं और डेक्सेम के माध्यम से लाखा 2.75 लाख ई-पुस्तकों, 4,300 से अधिक ई-जर्नल भरतीय और विदेशी जर्नल (सम्प्रकाशित और विदेशीरित) और 4,30 लाख प्रश्न वेक्षण डेक्सेम सहित अन्य लेखों वाले पुस्तकालय उत्तमोत्तमता लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पुस्तकालय ई-प्रोफेस द्वारा अपडेट कर नहींनाम तकनीकों की अधिक से अधिक विद्यार्थीयों तक पहुंचाने के लिए प्रयास रहा। नेहरू पुस्तकालय के पूर्व पुस्तकालयप्रबल्लय द्वारा, जलवन विंग ने एटीएम वैज्ञानिक सिस्टम (आईआरएआर) प्रोजेक्ट के तहत आयोजित उपयोग से विद्यार्थीय प्रशिक्षण के कार्यक्रमों तक पहुंच बनाकर नहीं उठाया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	१५-१२-२३	५	६-८

मधुक्रांति योजना के तहत मधुमक्खी पालन से स्वरोजगार स्थापित कर सकेंगे युवा किसान

पहले चरण में करनाल, कुरुक्षेत्र, झज्जर व सोनीपत में दिया जाएगा प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा के भूमिहीन, बेरोजगार, अशिक्षित ग्रामीण पुरुष व महिला कृषकों को अब मधुमक्खी पालन के प्रति रुचि पैदा करने व छोटी मधुमक्खी पालन इकाई की स्थापना कर इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाने में आर्थिक व तकनीकी मदद मिलेगी। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के बीच एमओयू हुआ है। अब युवा किसान मधुक्रांति योजना के तहत मधुमक्खी पालन से स्वरोजगार स्थापित कर सकेंगे।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की तरफ से उत्तरी क्षेत्रीय पाइपलाइन के कार्यकारी निदेशक एसके कनौजिया ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस दौरान इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की तरफ से उत्तरी क्षेत्रीय पाइपलाइन से डिप्टी जनरल मैनेजर नीरज सिंह व मैनेजर अनुराग जयसबाल भी मौजूद रहे।



एमओयू साइन करते हुए कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारी।

हरियाणा शहद उत्पादन में अग्रणी राज्यों में से एक है। मधुमक्खी पालन क्षेत्रों में हरियाणा राज्य पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है। प्रदेश के भूमिहीन, बेरोजगार, अशिक्षित व कम जोत वाले किसान मधुमक्खी पालन को रोजगार के रूप में अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकते हैं।

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के उत्तरी क्षेत्रीय पाइपलाइन के कार्यकारी निदेशक एसके कनौजिया ने बताया कि हरियाणा में मधुमक्खी पालन में रोजगार के बेहतरीन अवसर हैं। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष एवं परियोजना अधिकारी डॉ. सुनीता यादव ने बताया कि हरियाणा के विभिन्न

जिलों में वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन और इसमें विविधिकरण को अपनाने से स्थाई आर्थिक व पोषण सुरक्षा विषय पर आधारित मधुक्रांति योजना के तहत शुरुआती चरण में हरियाणा के चार जिलों का चयन किया गया है। जिनमें करनाल, कुरुक्षेत्र, झज्जर व सोनीपत शामिल हैं। यहां युवाओं व महिलाओं को छोटी मधुमक्खी पालन इकाई की स्थापना कर इन्हें स्वरोजगार के रूप में अपनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। कृषि विज्ञान केंद्रों की देखरेख व उनकी मदद से प्रशिक्षकों को उनके उत्पादों की मार्केटिंग करने में भी मदद की जाएगी। साथ ही उन्हें मधुमक्खी पालन इकाइयों का भी प्रमाण करवाया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	१५-१२-२३	५	७-८

आलू की फसल में पछेती झुलसा बीमारी की संभावना, फफूंदनाशक दवा का छिड़काव करें

10 दिन के अंतराल में जल निकास का प्रबंध व खरपतवार नष्ट करें

भारतीय न्यूज | हिसार

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला-हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित इंडो-ब्लाइटकास्ट पैन इंडिया मॉडल से पछेती झुलसा बीमारी का पूर्वानुमान लगाया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक फसलों में आने वाली समस्याओं के बारे में समय से पहले किसानों को लगातार सलाह दे रहे हैं।

इसी कड़ी में आलू से संबंधित किसानों को सलाह दी जा रही है कि भविष्य में हिसार में आलू की फसल में पछेती झुलसा बीमारी आने की संभावना है, जिन किसानों ने आलू की फसल में अभी तक फफूंदनाशक दवा का छिड़काव नहीं किया है या जिनकी आलू की फसल में पछेती झुलसा बीमारी नहीं हुई है।

यह हैं बीमारी के लक्षण

कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. एसके तेहलान ने कहा कि पछेती झुलसा बीमारी फाइटोपथोरा इन्फेस्टाइंस फफूंद के कारण होता है, जिसका प्रभाव पत्तियों, तने व कदों पर दिखता है। बीमारी के प्रारंभिक लक्षण पौधों की पत्तियां गहरे भूरे व बैंगनी रंग में बदल जाती हैं। पौधों की पत्तियों पर चारों तरफ हल्के पीले रंग का घेरा भी बन जाता है। तापमान में अधिक नमी व बादल छाने पर पत्तियों की निचली सतह पर फफूंद की परत जमने लगती है।

उन्होंने कहा कि किसान मैन्कोजेब इंडोफाल एन-45 या मैनजेब दवा 600 से 800 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। साथ ही 10 दिन के अंतराल में किसान आलू की फसल से जल निकासी का उचित प्रबंध करें और खेतों को खरपतवार रहित रखें।